IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

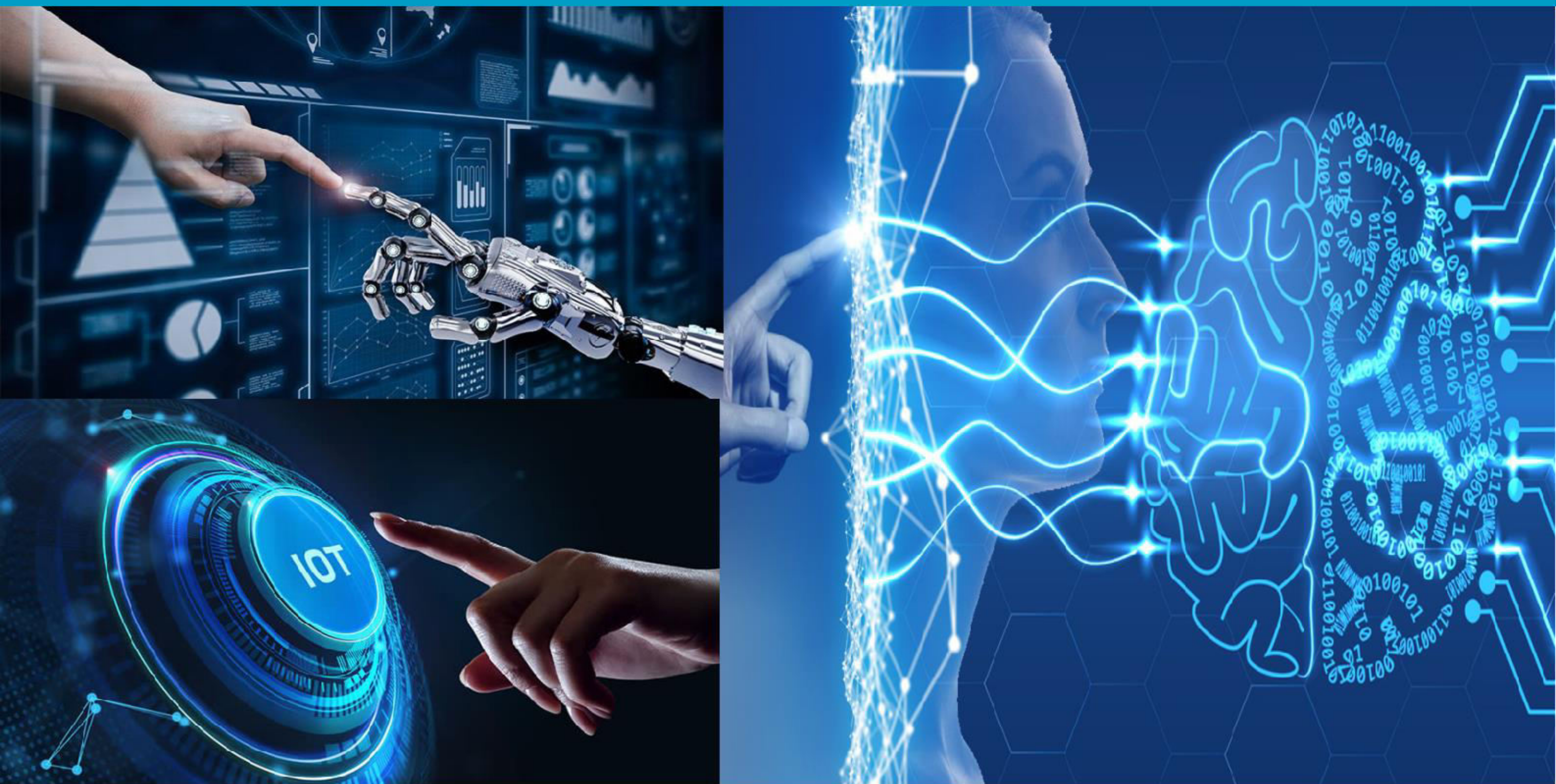


# INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 11, Issue 5, May 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.802

+91 99405 72462 +9163819 07438 ijmrsetm@gmail.com www.ijmrsetm.com

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 5, May 2024 |

# महाकवि कालिदास के नाटकों में प्राकृतिक चित्रण

**Dr. Rajmal Malav**

Professor, Department of Sanskrit, Govt. Arts Girls College, Kota, Rajasthan, India

**सार:** कालिदास अपनी विषय-वस्तु देश की सांस्कृतिक विरासत से लेते हैं और उसे वे अपने उद्देश्य की प्राप्ति के अनुरूप ढाल देते हैं। उदाहरणार्थ, अभिज्ञान शाकुन्तल की कथा में शकुन्तला चतुर, सांसारिक युवा नारी है और दुष्यन्त स्वार्थी प्रेमी है। इसमें कवि तपोवन की कन्या में प्रेमभावना के प्रथम प्रस्फुटन से लेकर वियोग, कुण्ठा आदि की अवस्थाओं में से होकर उसे उसकी समग्रता तक दिखाना चाहता है। उन्हीं के शब्दों में नाटक में जीवन की विविधता होनी चाहिए और उसमें विभिन्न रुचियों के व्यक्तियों के लिए सौंदर्य और माधुर्य होना चाहिए।

त्रैगुण्योद्भवम् अत्र लोक-चरितम् नानृतम् दृश्यते।
नाट्यम् भिन्न-रुचेर जनस्य बहुधापि एकम् समाराधनम्।।

## I. परिचय

कालिदास के जीवन के बारे में हमें विशेष जानकारी नहीं है। उनके नाम के बारे में अनेक किवदन्तियां प्रचलित हैं जिनका कोई ऐतिहासिक मूल्य नहीं है। उनकी कृतियों से यह विदित होता है कि वे ऐसे युग में रहे जिसमें वैभव और सुख-सुविधाएं थीं। संगीत तथा नृत्य और चित्र-कला से उन्हें विशेष प्रेम था। तत्कालीन ज्ञान-विज्ञान, विधि और दर्शन-तंत्र तथा संस्कारों का उन्हें विशेष ज्ञान था। उन्होंने भारत की व्यापक यात्राएं कीं और वे हिमालय से कन्याकुमारी तक देश की भौगोलिक स्थिति से पूर्णतः परिचित प्रतीत होते हैं। हिमालय के अनेक चित्रांकन जैसे विवरण और केसर की क्यारियों के चित्रण (जो कश्मीर में पैदा होती है) ऐसे हैं जैसे उनसे उनका बहुत निकट का परिचय है।

जो बात यह महान कलाकार अपनी लेखिनी के स्पर्श मात्र से कह जाता है, अन्य अपने विशद वर्णन के उपरांत भी नहीं कह पाते। कम शब्दों में अधिक भाव प्रकट कर देने और कथन की स्वाभाविकता के लिए कालिदास प्रसिद्ध हैं। उनकी उक्तियों में ध्वनि और अर्थ का तादात्मय मिलता है। उनके शब्द-चित्र सौन्दर्यमय और सर्वांगीण सम्पूर्ण हैं, जैसे – एक पूर्ण गतिमान राजसी रथ (विक्रमोर्वशीय, 1.4), दौड़ते हुए मृग-शावक (अभिज्ञान-शाकुन्तल, 1.7), उर्वशी का फूट-फूटकर आंसू बहाना (विक्रमोर्वशीय, छन्द 15), चलायमान कल्पवृक्ष की भांति अन्तरिक्ष में नारद का प्रकट होना (विक्रमोर्वशीय, छन्द 19)। उपमा और रूपकों के प्रयोग में वे सर्वोपरि हैं।[1,2,3]

सरसिजमनुविद्धं शैवालेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमिधकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।

'कमल यद्यपि शिवाल में लिपटा है, फिर भी सुन्दर है। चन्द्रमा का कलंक, यद्यपि काला है, किन्तु उसकी सुन्दरता बढ़ाता है। ये जो सुकुमार कन्या है, इसने यद्यपि वल्कल-वस्त्र धारण किए हुए हैं तथापि वह और सुन्दर दिखाई दे रही है। क्योंकि सुन्दर रूपों को क्या सुशोभित नहीं कर सकता ?'

कालिदास की रचनाओं में सीधी उपदेशात्मक शैली नहीं है अपितु प्रीतमा पत्नी के विनम्र निवेदन सा मनुहार है। मम्मट कहते हैं : 'कान्तासम्मिततयोपदेशायुजे।' उच्च आदर्शों के कलात्मक प्रस्तुतीकरण से कलाकार हमें उन्हें अपनाने को विवश करता है। हमारे समक्ष जो पात्र आते हैं हम उन्हीं के अनुरूप जीवन में आचरण करने लगते हैं और इससे हमें व्यापक रूप में मानवता को समझने में सहायता मिलती है।

संस्कृतिक एवं सामाजिक तत्त्व

एक महान सांस्कृतिक विरासत पर कालिदास के समृद्ध एवं उज्जवल व्यक्तित्व की छाप है और उन्होंने अपनी रचनाओं में मोक्ष, व्यवस्था और प्रेम के आदर्शों को अभिव्यक्ति दी है। उन्होंने व्यक्ति को संसार के दु:ख-दर्द और संघर्षों से अवगत कराने के लिए, प्रेम-वासना, इच्छा-आकांक्षा, आशा-स्वप्न, सफलता विफलता आदि को अभिव्यक्ति दी है। भारत ने जीवन को अपनी समग्रता में देखा है और उसमें किसी भी विखण्डन का विरोध किया है।

कवि ने उन मानसिक द्वन्द्वों का वर्णन किया है जो आत्मा को विभक्त करते हैं और इस तरह उन्होंने इसे समग्रता में देखने में हमारी सहायता की है।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 5, May 2024 |

कालिदास की रचनाओं में हमारे लिए सौंदर्य के क्षण, साहसिक घटनाएं, त्याग के दृश्य और मानव मन की नित-नित बदलती मनः स्थितियों के रूप संरक्षित हैं। उनकी कृतियां मानव प्रारब्ध के वर्णनातीत चित्रण के लिए सदैव पढ़ी जाती रहेंगी क्योंकि कोई महान कवि ही ऐसी प्रस्तुतियां दे सकता है। उनकी अनेक पंक्तियां संस्कृत में सूक्तियां बन गई हैं। उनकी मान्यता है कि हिमालय क्षेत्र में विकसित संस्कृति विश्व की संस्कृतियों की मापदण्ड हो सकती है। यह संस्कृति मूलतः आध्यात्मिक है। हम सभी सामान्यतः समय-चक्र में कैद हैं और इसीलिए हम अपने अस्तित्व की संकीर्ण सीमाओं में घिरे हैं। अतः हमारा उद्देश्य अपने मोहजालों से मुक्त होकर चेतना के उस सत्य को पाने का होना चाहिए जो देश-काल से परे है जो अजन्मा, चरम और कालातीत है। हम इसका चिंतन नहीं कर सकते, इसे वर्गों, आकारों और शब्दों में विभाजित नहीं कर सकते। इस चरम सत्य की अनुभूति का ज्ञान ही मानव का उद्देश्य है। रघुवंश के इन शब्दों को देखिए - 'ब्रह्माभूयम् गतिम् अजागम्।' ज्ञानीपुरुष कालातीत परम सत्य के जीवन को प्राप्त होते हैं।

वह जो चरम सत्य है सभी अज्ञान से परे है और वह आत्मा और पदार्थ के विभाजन से ऊपर है। वह सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान है। वह अपने को तीन रूपों में व्यक्त करता है (त्रिमूर्ति) ब्रह्मा, विष्णु और शिव – कर्त्ता, पालक तथा संहारक। ये देव समाज पद वाले हैं आम जीवन में कालिदास शिवतंत्र के उपासक हैं। तीनों नाटकों – अभिज्ञान शाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र – की आरम्भिक प्रार्थनाओं से प्रकट होता है कि कालिदास शिव-उपासक थे। देखिए रघुवंश के आरम्भिक श्लोक में :[4,5,6]

जगतः पितरौ वन्दे पार्वती-परमेश्वरौ।

यद्यपि कालिदास परमात्मा के शिव रूप के उपासक हैं तथापि उनका दृष्टिकोण किसी भी प्रकार संकीर्ण नहीं है। परम्परागत हिन्दू धर्म के प्रति उनका दृष्टिकोण उदार है। दूसरों के विश्वासों को उन्होंने सम्मान की दृष्टि से देखा। कालिदास की सभी धर्मों के प्रति सहानुभूति है और वे दुराग्रह और धर्मान्धता से मुक्त हैं। कोई भी व्यक्ति वह मार्ग चुन सकता है जो अच्छा लगता है क्योंकि अन्ततः ईश्वर के विभिन्न रूप एक ही ईश्वर के विभिन्न रूप हैं जो सभी रूपों में निराकार है।

कालिदास पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मानते हैं। यह जीवन में पूर्णता के मार्ग की एक अवस्था है। जैसे हमारा वर्तमान जीवन पूर्व कर्मों का फल है वैसे ही हम इस जन्म में प्रयासों से अपना भविष्य सुधार सकते हैं। विश्व पर सदाचार का शासन है। विजय अन्ततः अच्छाई की होगी। यदि कालिदास की रचनाएं दुखान्त नहीं हैं तो उसका कारण यह कि वे सामंजस्य और शालीनता के अन्तिम सत्य को स्वीकारते हैं। इस मान्यता के अन्तर्गत वे अधिकांश स्त्री-पुरुषों के दुःख-दर्दों के प्रति हमारी सहानुभूति को मोड़ देते हैं।

कालिदास की रचनाओं से इस गलत धारणा का निराकरण हो जाता है कि हिन्दू मस्तिष्क ने ज्ञान-ध्यान पर अधिक ध्यान दिया और सांसारिक दुःख-दर्दों की उन्होंने अवहेलना की। कालिदास के अनुभव का क्षेत्र व्यापक था। उन्होंने जीवन, लोक, चित्रों और फूलों में समान आनन्द लिया। उन्होंने मानव को सृष्टि (ब्रह्माण्ड) और धर्म की शक्तियों से अलग करके नहीं देखा। उन्हें मानव के सभी प्रकार के दुःखों, आकांक्षाओं, क्षणिक खुशियों और अन्तहीन आशाओं का ज्ञान था।

वे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष – मानव जीवन के चार पुरुषार्थों में सामंजस्य के पोषक थे। अर्थ पर, जिसमें राजनीति और कला भी सम्मिलित है धर्म का शासन रहना चाहिए। साध्य और साधन में परस्पर सह-संबंध है। जीवन वैध (मान्य) संबंधों से ही जीने योग्य रहता है। इन संबंधों को स्वच्छ और उज्जवल बनाना ही कवि का उद्देश्य था।

इतिहास प्राकृतिक तथ्य न होकर नैतिक सत्य है। यह काल-क्रम का लेखा-जोखा मात्र नहीं है। इसका सार अध्यात्म में निहित है जो आगे की पीढ़ियों को ज्ञान प्रदान करता है। इतिहासकारों को अज्ञान को भेद कर उस आन्तरिक नैतिक गतिशीलता को आत्मसात करना चाहिए। इतिहास मानव की नैतिक इच्छा का फल है जिसकी अभिव्यक्तियां स्वतंत्रता और सृजन हैं।

रधुवंश के राजा जन्म से ही निष्कलंक थे। धरती से लेकर समुद्र तक (आसमुद्रक्षितिसानाम्) इनका व्यापक क्षेत्र में शासन था। इन्होंने धन का संग्रह दान के लिए किया, सत्य के लिए चुने हुए शब्द कहे, विजय की आकांक्षा यश के लिए की और गृहस्थ जीवन पुत्रेष्णा के लिए रखा। बचपन में शिक्षा, युवावस्था में जीवन के सुखभोग, वृद्धावस्था में आध्यात्मिक जीवन और अन्त में योग या ध्यान द्वारा शरीर का त्याग किया।

राजाओं ने राजस्व की वसूली जन-कल्याण के लिए की, 'प्रजानाम् एवं भूत्यार्थम्' जैसे सूर्य जल लेता है और उसे सहस्रगुणा करके लौटा देता है। राजाओं का लक्ष्य धर्म और न्याय होना चाहिए। राजा ही प्रजा का सच्चा पिता है, वह उन्हें शिक्षा देता है, उनकी रक्षा करता है और उन्हें जीविका प्रदान करता है जबकि उनके माता-पिता केवल उनके भौतिक जन्म के हेतु हैं। राजा अज के राज्य में प्रत्येक व्यक्ति यही मानता था कि राजा उनका व्यक्तिगत मित्र है।

शाकुन्तलं में तपस्वी राजा से कहता है : 'आपके शस्त्र त्रस्त और पीड़ितों की रक्षा के लिए हैं न कि निर्दोषों पर प्रहार के लिए।' 'आर्त त्राणाय वाह शस्त्रम् न प्रहारतुम् अनगसि।' दुष्यन्त एवं शकुन्तला का पुत्र भरत, जिसके नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा है,

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 5, May 2024 |

सर्वदमन भी कहलाता है – यह केवल इसलिए नहीं कि उसने केवल भयानक वन्य पशुओं पर विजयी पायी अपितु उसमें आत्मसंयम भी था। राजा के लिए आत्मसंयम भी अनिवार्य है।

रघुवंश में अग्निवर्ण दुराचारी हो जाता है। उसके अन्तःपुर में इतनी अधिक नारियां हैं कि वह उनका सही नाम तक नहीं जान पाता। उसे क्षय हो जाता है और उस अवस्था में भी भोग का आनन्द नहीं छोड़ पाता और उसकी मृत्यु हो जाती है। शालीन मानव-जीवन के लिए संयम अनिवार्य है। कालिदास कहते है : 'हे कल्याणी, खान से निकलने के उपरांत भी कोई भी रत्न स्वर्ण में नहीं जड़ा जाता, जब तक उसे तराशा नहीं जाता।'
यद्यपि कालिदास की कृतियों में तप को भव्यता प्रदान की गई है और साधु और तपस्वियों को पूजनीय रूप में प्रस्तुत किया गया है, तथापि कहीं भी भिक्षापात्र की सराहना नहीं की गई।[7,8,9]

धर्म के नियम जड़ एवं अपरिवर्तनीय नहीं हैं। परम्परा को अपनी अन्तर्दृष्टि और ज्ञान से सही अर्थ दिया जाना चाहिए। परम्परा और व्यक्तिगत अनुभव एक-दूसरे के पूरक हैं। जहां हमें एक ओर अतीत विरासत में मिला है वहीं हम दूसरी ओर भविष्य के न्यासधारी (ट्रस्टी) हैं। अपने अन्तिम विश्लेषण में प्रत्येक को सही आचरण के लिए अपने अन्तःकरण में झांकना चाहिए। भगवतगीता के आरम्भिक अध्याय में जब अर्जुन क्षत्रिय होने के नाते समाज द्वारा आरोपित युद्ध करने के अपने दायित्व से मना करते हैं और जब सुकरात कहते हैं, 'एथेंसवासियों ! मैं ईश्वर की आज्ञा का पालन करूंगा, तुम्हारी आज्ञा का नहीं।' तो वे ऐसा अपनी अन्तर्आत्मा के निर्देश पर कहते हैं न कि किसी बंधे-बंधाए नियमों के अनुपालन के कारण। आरम्भिक वैदिक साहित्य में जड़-चेतन की एकरूपता का निरूपण है और अनेक वैदिक देवी-देवता प्रकृति के प्रमुख पक्षों का प्रतिनिधित्व करते हैं। आत्मज्ञान की खोज में प्रकृति की शरण में जाने, हिमश्रृंगों पर जाने या तपोवन में जाने का शिकार बहुत प्राचीन काल से हमारे यहां विद्यमान रहा है। मानव के रूप में हमारी जड़े प्रकृति में हैं और हम नाना रुपों में इसे जीवन में देखते हैं। रात और दिन, ऋतु-परिवर्तन – ये सब मानव-मन के परिवर्तन, विविधता और चंचलता के प्रतीक हैं। कालिदास के लिए प्रकृति यन्त्रवत और निर्जीव नहीं है। इसमें एक संगीत है। कालिदास के पात्र पेड़-पौधों, पर्वतों तथा नदियों के प्रति संवेदनशील हैं और पशुओं के प्रति उनमें भ्रात भावना है। हमें उनकी कृतियों में खिले हुए फूल, उड़ते पक्षी और उछलते-कूदते पशुओं के वर्मन दिखाई देते हैं। रघुवंश में हमें गाय के प्रेम का अनुपम वर्णन मिलता है। ऋतुसंहार में षट ऋतुओं का हृदयस्पर्शी विवरण है। ये विवरण केवल कालिदास के प्राकृतिक-सौन्दर्य के प्रति उनकी दृष्टि को नहीं अपितु मानव-मन के विविध रूपों और आकांक्षाओं की समझ को भी प्रकट करते हैं। कालिदास के लिए नदियों, पर्वतों, वन-वृक्षों में चेतन व्यक्तित्व है जैसा कि पशुओं और देवों में है।

शाकुन्तला प्रकृति की कन्या है। जब उसे उसकी अमानुषी मां मेनका ने त्याग दिया तो आकाशगामी पक्षियों ने उसे उठाया और तब तक उसका पालन-पोषण किया जब तक कि कण्ठ ऋषि आश्रम में उसे नहीं ले गए। शकुन्तला ने पौधों को सींचा, उन्हें अपने साथ-साथ बढ़ते देखा और जब उनके ऊपर फल-फूल आए तो ऐसे अवसरों को उसने उत्सवों की भांति मनाया। शाकुन्तला के विवाह के अवसर पर वृक्षों ने उपहार दिए, वनदेवियों ने पुष्प-वर्षा की, कोयलों ने प्रसन्नता के गीत गाए। शकुंतला की विदाई के समय आश्रम दुःख से भर उठा। मृगों के मुख से चारा छूट कर गिर पड़ा, मयूरों का नृत्य रुक गया और लताओं ने अपने पत्रों के रूप में अश्रु गिराए। सीता के परित्याग के समय मयूरों ने अपना नृत्य एकदम बन्द कर दिया, वृक्षों ने अपने पुष्प झाड़ दिए और मृगियों ने आधे चबाए हुए दूर्वादलों को मुंह से गिरा दिया।

कालिदास कोई विषय चुनते हैं और आँख में उसका एक सजीव चित्र उतार लेते हैं। मानस-चित्रों की रचना में वे बेजोड़ हैं। कालिदास का प्रकृति का ज्ञान यथार्थ ही नहीं था अपितु सहानुभूति भी था। उनकी दृष्टि कल्पना से संयुक्त है। कोई भी व्यक्ति तब तक पूर्णतः महिमामण्डित नहीं हो सकता जब तक कि वह मानव जीवन से इतर जीवन की महिमा और मूल्यों को नहीं जानता। हमें जीवन के समग्र रूपों के प्रति संवेदना विकसित करनी चाहिए। सृष्टि केवल मनुष्य के लिए नहीं रची गई है।

पुरुष और नारी के प्रेम ने कालिदास को आकर्षित किया और प्रेम के विविध रूपों के चित्रण में उन्होंने अपनी समृद्ध कल्पना का खुलकर उपयोग किया है। इसमें उनकी कोई सीमाएं नहीं हैं। उनकी नारियों में पुरुषों की अपेक्षा अधिक आकर्षण है क्योंकि उनमें कालातीत और सार्वभौम गुण हैं जबकि पुरुष पात्र संवेदना शून्य और अस्थिर बुद्धि हैं। उनकी संवेदना सतही है जबकि नारी का दुःख-दर्द अन्तरतम का है।

पुरुष में स्पर्धा की भावना और स्वाभिमान उसके कार्यालय, कारखाने या रणक्षेत्र में उपयोगी हो सकते हैं पर उनकी तुलना नारी के सुसंस्कार, सौन्दर्य और शालीनता के गुणों से नहीं हो सकती। अपने व्यवस्था और सामंजस्य के प्रेम के कारण नारी परम्परा (संस्कृति) को जीवित रखती है।

जब कालिदास नारी के सौन्दर्य का वर्णन करते हैं तो वे शास्त्रीय शैली को अपनाते हैं और ऐसा करते समय वे अपने विवरणों के वासनाजन्य होने या अतिविस्तृत हो जाने का खतरा मोल लेते हैं। मेघदूत में 'मेघ' को 'यक्ष' अपनी पत्नी का विवरण (हुलिया) इस प्रकार देता है :

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 5, May 2024 |

'नारियों में वह ऐसी है मानो विधाता ने उसका रचना सर्वप्रथम की है, पतली और गोरी है, दांत पतले और सुन्दर हैं। नीचे के ओष्ठ पके बिम्ब फल (कुंदरू) की भांति लाल है। कमर पतली है। आँखें उसकी चकित हिरणी जैसी हैं। नाभि गहरी है तथा चाल उसकी नितम्बभार से मन्द और स्तनभार से आगे की ओर झुकी हुई है।'[10,11,12]

कालिदास द्वारा प्रस्तुत की गई नारियों में हमें अनेक रोचक प्रकार दिखाई देते हैं। उनमें से अनेक को समाज के परम्परागत बहानों और सफाई की आवश्यकता नहीं है। उनके द्वन्द्व और तनावों को सामंजस्य की आवश्यकता थी। पुरुष संदेहमुक्त अनुभव करते थे और वे पूर्ण सुरक्षित थे। बहुविवाह उनके लिए आम बात थी, परन्तु कालिदास की नारियां कल्पनाशील और चतुर हैं अतः वे संदेह और अनिश्चय के घेरे में आ जाती हैं। वे सामान्यतः अस्थिर नहीं हैं परन्तु वे विश्वसनीय, निष्ठावान तथा प्रेममय हैं।

प्रेम के लिए झेली गई कठिनाइयां और यातनाएं प्रेम को और गहन बनाती हैं। मेघदूत में अजविलाप और रतिविलाप में वियोग की करुणामय मार्मिक अभिव्यक्ति है। प्रेम का संयोग रूप विक्रमोर्वशीय में है।

मालविकाग्निमित्र में रानी को धरिणी कहा गया है क्योंकि वह सब कुछ सहती है। उसमें गरिमा और सहिष्णुता है। इरावती कामुक, अविवेकी, शंकालु, अतृप्त और मनमानी करने वाली है। जब राजा ने उसे छोड़कर मालविका को अपनाया तो वह कठोर शब्दों में शिकायत करती है और कटु शब्दों में राजा को फटकारती है।

मालविका के प्रति अग्निमित्र का प्रेम इन्द्रिपरक है। राजा दासी की सुन्दरता और लावण्य पर मोहित है। विक्रमोर्वशीय में पात्रों में दैवी और मानवीय गुणों का मिश्रण है। उर्वशी का चरित्र सामान्य जीवन से हटकर है। उसमें इतनी शक्ति है कि अदृश्य रूप से वह अपने प्रेमी को देख सकती है तथा उसकी बातें सुन सकती है। उसमें मातृप्रेम नहीं है क्योंकि वह अपने पति को खोने के स्थान पर अपने बच्चे का परित्याग कर देती है। उसका प्रेम स्वार्थजन्य है।

पुरुरवा भावविह्वल होकर प्रेम के गीत गाता है जिसका भावार्थ यह है कि विश्व की सत्ता उतनी आनन्ददायक नहीं जितना प्रेम आनन्ददायक है। विफल प्रेमी के लिए संसार दुःख और निराशा से भरा है और सफल प्रेमी के लिए वह सुख और आनन्द से भरा है। इस नाटक में हम प्रेम को फलीभूत होते देखते हैं। इसमें भूमि और आकाश एक होते हैं। भौतिक आकर्षण पर आधारित वासना नैतिक सौन्दर्य और आध्यात्मिक ज्ञान में परिवर्तित होती है।

## II. विचार-विमर्श

भारतीय साहित्य कि विभूति सम्पूर्ण कविकुल सम्राट कालिदास काव्य जगत के दैदीप्यमान रत्न हैं | काव्य रसिकों ने इन्हें कविता -कामिनी -विलास कहा है |समालोचकों ने प्राचीन कवियों की गणना में कालिदास को 'कनिष्ठिकाधिष्ठित 'बताकर उनकी स्पर्धा में ठहरने वाले किसी अन्य प्रतिस्पर्धी कवि के अस्तित्व की संभावना का ही खंडन किया है -
"पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः |
अद्यापि तत्तुल्य कवेर्भावदनामिका सार्थवती बभूवः ||"
जैसी किंवदन्ती कालिदास की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करती है |आचार्य आनन्दवर्धन ने भी कवि की गणना विश्व विख्यात महाकवियों में की है –
"अस्मिन्नतिविचित्रकविपरम्परावाहिनि संसारे कालिदासप्रभृतयो द्वित्राः पञ्चषा एव वा महाकवय इति गण्यते। "
अर्थात् इस अतिविचित्र कवियों की परम्परा को वहन करने वाले संसार में कालिदास आदि दो तीन या पांच छः ही कवि गिने जाते हैं| "(ध्वन्यालोक १/६)
महाकवि हमारे राष्ट्रीय कवि हैं तथा भारतीय संस्कृति के प्रमुख परिपोषक भी |इनकी काव्य वाणी में संपूर्ण भारत की संस्कृति बोलती है |कालिदास ने जैसा मानव हृदय के सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों का निरीक्षण किया वैसा अन्य ने नहीं ,कालिदास अन्तर तथा बाह्य दोनों जगत् के सूक्ष्म निरीक्षक कवि हैं|
संस्कृत साहित्य के उपवन में कालिदास का समागम एक "वसन्त दूत "के रूप में हुआ है । उन्होंने संस्कृत भाषा को वाणी दी ,नए भाव ,नई दिशाएँ ,नए विचार और नई पद्धतियाँ दी हैं ।
कालिदास संस्कृत के सबसे बड़े कवि और नाटककार हुए । परवर्ती संस्कृत ,हिंदी एवं कुछ विषयों में विदेशी कवि भी कालिदास के ऋणी हैं । जर्मनी के प्रसिद्ध कवि "गेटे "के "फ़ाउस्ट "नामक नाटक में शाकुन्तल का प्रभाव परिलक्षित होता है । महाकवि कालिदास के विषय में बड़े -बड़े विद्वानों विचार प्रकट किये हैं ।
मैकडोनल के शब्दों में "कालिदास की कविता में भारतीय प्रतिभा का उत्कृष्ट रूप समाविष्ट है । उनके काव्य में भावों का ऐसा सामंजस्य है जो अन्यत्र देखने को नहीं मिलता । (ए हिस्ट्री ऑफ़ संस्कृत लिट्रेचर,पृ. ५५३ )
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में " भारतीय धर्म , दर्शन , शिल्प और साधना में जो कुछ उदात्त है ,जो कुछ ललित और मोहन है ,उनका प्रयत्न पूर्वक सजाया सँवारा रूप कालिदास का काव्य है । "

कालिदास की समता तो आज तक कोई और कवि कर ही नहीं पाया । उनकी सभी रचनाओं में अत्यंत प्रेम और भाव विभोर कर देने वाली अविनाशिनी शक्ति विद्यमान है । अतः दो सहस्र वर्षों बाद भी उनकी रचनाएँ यथावत आनंददायक हैं ।संस्कृत के सुप्रसिद्ध कवि बाणभट्ट ने लिखा है –

"निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु ।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते ॥ "

मेघदूत की प्रसंशा करते हुए मनोमुग्ध होकर यूरोपीय विद्वजनों ने अपने योरोप के साहित्य में किसी काव्य को इसकी समता के योग्य नहीं माना । मिस्टर मोन फांचे (Mr.Mon Fanche ) ने कहा है –

"There is nothing so perfect in the elegiac litreature of Europe as the Meghaduta of Kalidas."

एक अन्य जर्मन विद्वान ने कहा है –

"There exist for instance in our European litreature few pieces to be compared with the Meghaduta in Sentiment and beauty."

अभिज्ञानशाकुंतलम कालिदास की सर्वोत्कृष्ट रचना है । यह सात अङ्क का नाटक है इसमें हस्तिनापुर के राजा दुष्यन्त और महर्षि कण्व की पालिता धर्म -कन्या शकुन्तला की प्रणयगाथा निबद्ध है । महर्षि कण्व की अनुपस्थिति में उनके तपोवन में दुष्यंत और शकुन्तला का प्रथम मिलन होता है ,और वही मिलन "गन्धर्व विवाह" का रूप धारण कर लेता है । राजा दुष्यंत महर्षि कण्व के आगमन से पूर्व ही अपनी राजधानी को प्रस्थान करते समय अपनी प्रियतमा शकुन्तला को स्वनामांकित मुद्रिका देते हुए कहते हैं कि -यह मेरी याद दिलाएगी । इसी बीच अतिथि सत्कार में शकुन्तला की असावधानी दुर्वासा ऋषि के शाप का कारण बनती है । किन्तु उसकी दोनों सखियों को यह रहस्य पता है कि शापवश राजा शकुन्तला को देखकर तब तक नहीं पहचान सकेगा , जब तक वह किसी "अभिज्ञान "का दर्शन ना कर ले । महर्षि कण्व आश्रम में लौट कर शकुन्तला के " गन्धर्व विवाह " का समाचार ज्ञात करके प्रसन्न हैं तथा उसे गर्भवती जानकार राजा के पास भेजना चाहते हैं । आश्रम से राजधानी जाते समय सखियाँ शकुन्तला को बताती हैं की यदि राजा पहचानने से तुम्हें भूल करे तो उसे नामांकित मुद्रा दिखा देना । राजा शकुन्तला को शापवश नहीं पहचान पाता तो शकुन्तला उसको मुद्रिका दिखाना चाहती है किन्तु वह अँगूठी तो "शक्रावतार "में शची तीर्थ के जल को प्रणाम करते समय उसके हाथ से स्खलित हो चुकी थी । कुछ दिन बाद ही वह अँगूठी राजा के पास पहुँचती है ,तब वह सम्पूर्ण घटना का स्मरण करके शकुन्तला की खोज में जाते हैं । अंत में पुनर्मिलन के साथ नाटक समाप्त होता है ।

कालिदास ने अभिज्ञान - शाकुन्तल में महाभारत के "शकुन्तलोपाख्यान "के इतिवृत्त को अपनी नवनवोन्मेष शालिनी प्रतिभा से सरस एवं गरिमामय बनाकर प्रस्तुत किया है। चतुर्थ अङ्क में उनकी कला चरमोत्कर्ष पर
है - "काव्येषु नाटकं रम्यं ,तत्र रम्या शकुन्तला ।
तत्रापि चतुर्थोङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम् । ।"
और -"कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशकुन्तलम् ॥"

"अभिज्ञानशाकुन्तल "संस्कृत साहित्य का सर्वोत्कृष्ट नाटक है । इसके सात अंकों में दुष्यंत शकुन्तला के प्रेम ,वियोग और पुनर्मिलन का वर्णन है । इसका प्रधान रस संभोग(संयोग) श्रृंगार तथा विप्रलम्भ श्रृंगार है । करुण ,वीर ,अद्भुत ,हास्य ,भयानक ,और शान्त ये सहयोगी रस हैं । यह नाटक सुखान्त है इसमें वैदर्भी रीति का मुख्यतः प्रयोग हुआ है । इसके नायक दुष्यंत धीरोदात्त नायक हैं । दुष्यंत के व्यक्तित्व को सजीव बनाकर चित्रित किया है । दुष्यंत बलिष्ठ एवं पराक्रम शाली ,ललित कलाओं का मर्मज्ञ ,प्रकृति प्रेमी एवं कुशल चित्रकार है । उसमें मानवोचित दुर्बलताएं भी हैं ,किन्तु वह पुत्र वत्सल ,कवि ,कलाकोविद एवं कर्तव्य परायण राजा है । शकुन्तला निसर्ग कन्या है । पिता कण्व के प्रति उसके हृदय में असीम प्रेम है । कवि ने कण्व को वत्सल पिता एवं सद्गृहस्थ के रूप में चित्रित किया है ।

अभिज्ञानशाकुन्तल में कालिदास ने प्रेम और सौंदर्य का सुन्दर सामंजस्य प्रस्तुत किया है । उन्होंने केवल मानव सौंदर्य का ही वर्णन नहीं किया है ,वरन प्राकृतिक सौंदर्य के चित्रों का भी अत्यंत भव्य एवं मनोहारी चित्रण प्रस्तुत किया है ।

महाकवि कालिदास ने अपने नाटकों में तत्कालीन समाज का चित्रण यथास्थान किया है । उस युग के सामाजिक ,सांस्कृतिक , राजनैतिक,धार्मिक एवं पारिवारिक जीवन का यथार्थ चित्रण अभिज्ञानशाकुन्तल में मिलता है ।

कालिदास की लोकप्रियता का कारण उनकी सरल ,परिष्कृत और प्रसाद गुण पूर्ण शैली है कालिदास में कल्पना की ऊँची उड़ान है ,भावों में गम्भीरता है । विचारों में जीवन की घनी अनुभूति है ,भाषा में लोच और प्रांजलता है । उनकी कविता में मादकता है ,घटना संयोजन सुविचारित है । बाह्य एवं अन्तः प्रकृति का सूक्ष्म विश्लेषण हुआ है । चरित्र चित्रण में वैयत्तिकता को प्रधानता दी गई है, वर्णनों में अलंकारों की प्रधानता न होकर प्राकृतिक सुषमा की प्रमुखता है । उनकी भाषा में ध्वन्यात्मकता और प्रवाह है । उनका शब्द कोष अगाध है । उनकी उपमाएं बेजोड़ होती हैं इसीलिए उनके विषय में "उपमा कालिदासस्य"यह कथन सुविश्रुत है । उन्होंने स्वाभाविक रूप से उपमा ,रूपक ,स्वभावोक्ति ,निदर्शना,दीपक ,विभावना ,व्यतिरेक ,अर्थान्तरन्यास ,अनुप्रास ,यमक ,श्लेष ,उत्प्रेक्षा ,आदि अलंकारों का प्रयोग किया है । इसी प्रकार विविध प्रकार के छन्दों का प्रयोग करने में कालिदास सिद्ध हस्त हैं । उनकी रचनाओं में आर्या ,अनुष्टुप ,वंशस्थ ,,वसन्ततिलका ,मालिनी ,मन्दाक्रान्ता ,शिखरिणी ,शार्दूलविक्रीड़ित आदि छन्द पाठकों का मन अपनी ओर आकर्षित कर उन्हें भाव विभोर करते रहते हैं । कालिदास सर्वतोमुखी प्रतिभासम्पन्न महाकवि एवं नाटककार हैं । वे

साहित्य प्रकाश के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं । उनकी रचनाओं में स्वर्गीय आनन्द ,भौतिक विलास ,दैवी दिव्यता ,मानवीय मनोज्ञता और सात्विक सम्मोहन एक साथ सुलभ होकर निदर्शित है ।

कालिदास की रचनाओं में सभी नाट्य कला सम्बन्धी विशेषतायें हैं ,तथापि इनका प्रकृति चित्रण अप्रतिम एवं अत्यंत रमणीय है। कालिदास की काव्य कला का विकास ही प्रकृति वर्णन से आरम्भहोताहै।

कालिदास प्रकृति नटी के कुशल चितेरे हैं । उनका प्रकृति वर्णन सूक्षम और यथार्थ है प्रकृति को जितना महत्त्व पूर्ण स्थान कालिदास के काव्य में मिला है उतना परवर्ती साहित्य में नहीं । नारी सौंदर्य एवं नायिकाओं के अलंकरण के लिए भी वे प्राकृतिक उपादानों का ही ग्रहण करते हैं । जैसे वसंत पुष्पों से अलंकृत पार्वती –

"अशोकनिर्भत्सितपद्मरागमाकृष्टहेमद्युतिकर्णकारम् |
मुक्ताकलापीकृत्सिन्दुवारं वसन्तपुष्पाभरणं वहन्ती ॥"(कुमारसम्भवम्३/५३ )

अर्थात अशोक के पुष्प से पद्मराग मणि का तिरस्कार करने वाले ,सोने की कान्ति को ग्रहण करने वाले हार के समान किये गये निर्गुण्डी के पुष्पों वाले ऐसे वसन्त ऋतु के फूल रूप भूषण को धारण करति हुई (पर्वतराज कन्या दिखाई पड़ी । )

प्रकृति के आलम्बन ,उद्दीपन ,मानवीकृत ,उपदेशात्मक मानव की सहचरी आदि विविध रूप कवि की कुशल लेखनी से मूर्त हो उठे हैं । कालिदास ने अपनी रचनाओं में प्रकृति के दिव्या रूप की भी प्रतिष्ठा की है । अभिज्ञानशाकुंतलम् में तो आरम्भ से अंत तक कोमल एवं सरस प्रकृति का भव्य वर्णन मिलता है । शकुन्तला तो प्रकृति कन्या ही है । वह प्रकृति की उन्मुक्त वातावरण में ही उत्पन्न हुई ,प्रकृति ने ही उसका पालन पोषण किया और उसका श्रृंगार प्रसाधन दिए और उसका अधिकांश जीवन ही प्रकृति की गोद में ही व्यतीत हुआ । महर्षि कण्व के शब्दों में "शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन् "उसने अपना अन्तिम जीवन भी प्रकृति की गोद में ही व्यतीत किया |

मेघदूत गीतिकव्य तो प्रकृति काव्य ही है | उनका मेघ एक प्रकृति का ही अंग है ;तथा उसका सारा कार्य व्यापार प्रकृति क्रीड़ा ही है । भारत वर्ष के भव्य प्राकृतिक दृश्य इस गीतिकाव्य में देखने को मिलते हैं । अतः यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि कालिदास मूलतः प्रकृति के ही कवि हैं ।

कवि की सर्वप्रथम रचना "ऋतुसंहार "है । इसमें कवि ने विभिन्न ऋतुओं से मानवों पर पड़ने वाले प्रभावों का तथा उनके परिणामों का सुन्दर सरस वर्णन किया है । उन्होंने प्राकृतिक दृश्यों पर चेतन धर्म का समारोप कर उसका आलंकारिक चित्र प्रस्तुत किया है और कहीं कहीं प्रकृति को शुद्ध आलम्बन रूप में रखकर उसके प्रति अपना अनुराग व्यक्त किया है । कवि ने कामिनियों के उन विचारों और भावों का ही विशेष रूप से वर्णन किया है जो की इसमें प्रकृति के प्रभाव से उत्पन्न हुए हैं । इन कामिनियों के भावों का ही वर्णन करने के लिए ही कवि ने मानो प्रकृति की पृष्ठ भूमि का आश्रय लिया है ।

कालिदास कि प्रसंशा मे कहा गया है -
"पुष्पेषु चम्पा ,नगरीषु काञ्ची,
नदीषु गङ्गा ,नृपतौ च रामः |
नारीषु रम्भा .पुरुषेषु विष्णुः ,
काव्येषु माघः ,कवि कालिदासः ॥"

## III. परिणाम

कालिदास मुख्यत प्रकृति प्रेम के प्रमुख कवि माने जाते हैं। कालिदास प्रकृति की गोद में ही पले बढे है।। इसी कारण जब हम उनकी कृतियों को देखते हैं तो पाते हैं कि उनके कृति पात्र भी प्रकृति में ही अपना जीवन जीते हैं। यह सर्वथा स्वाभाविक और सत्य है कि मानव जीवन और प्रकृति का मनुष्य के जन्म से ही एक अटूट संबंध होता है। प्रकृति के बिना मानव जीवन मृत है। कालिदास भी प्रकृति से जुड़े ही मनुष्य थे। इसी कारण उनकी कृतियों में भी हमें प्रकृति चित्रण देखने को मिलता है।।

1. कालिदास के काव्य में प्रकृति चित्रण
कालिदास की प्रथम रचना कृति ऋतुसंहार को माना जाता है। कभी वे नवयुग में प्रकृति का चित्रण करते हैं तो कभी सौंदर्य रूप पर हाव-भाव में प्रकृति को चित्रित करते हैं।। मेघदूत में प्रकृति और मानव जीवन में एकता स्थापित करने का प्रयास किया गया है। कुमारसंभवम् में उन्होंने हिमालय की अभूतपूर्व सुंदरता का चित्रण करते हुए शिव और पार्वती का प्राकृतिक वर्णन किया है। रघुवंशम में कवि ने मानव जीवन और प्रकृति को एक सूत्र में भी पिरोया है। अभिज्ञान शाकुंतलम् me उन्होंने मानव जीवन और प्रकृति के मधुर संबंधों को हमारे सामने रखा है।[13,14,15]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 5, May 2024 |

2. आलंबन के रूप में प्रकृति का चित्रण

प्रकृति का सहज एवं में स्वाभाविक यथार्थ चित्रण ही आलंबन रूप है। हम पाते हैं कि संस्कृत के लगभग सभी कवियों ने आलंबन रूप में अपने काव्यों को लिखा है। कालिदास की कृतियों में भी हमें इस प्रकार का चित्रण देखने को मिलता है। हम देखते हैं कि वे यथार्थ चित्रण से प्रकृति को एक स्वाभाविक रूप प्रदान करते हैं। उनकी अधिकांश लक्षणों में हमें प्रकृति का आलंबन रूप ही देखने को मिलता है।।

3. मानवीकरण के रूप में प्रकृति चित्रण

कालिदास की रचनाओं में हम देखते हैं कि मानवीय भावना भी सुख और दुख का अनुभव करती हैं। अभिज्ञान शाकुंतलम् में हम देखते हैं कि जब शकुंतला कण्व ऋषि के आश्रम से अपनी विदाई लेती है तो मानो संपूर्ण प्रकृति ही सजीव हो उठती हैं। हिरण का बच्चा शकुंतला को जाने से रोकता। शकुंतला जब जाने की आज्ञा मांगती है तो कोयल कूकती है, मानो उन्होंने स्वीकृति दे दी हो। माधुरी लता को शकुंतला की बहन बताया गया है शकुंतला जाते-जाते माधुरी लता को गले लगाती है। वही रघुवंशम है हम देखते हैं कि जब राजा दिलीप नंदिनी गाय की सेवा के लिए जाते हैं तो मानो वृक्ष राजा की जय करते हैं। हवा मानों बांसुरी बजाती है।
मेघदूतम में हम पाते हैं कि मैं मेघ को एक सजीव प्राणी के रूप में मानवीकृत किया गया है।। मेघ को एक दूध के रूप में यक्ष अपनी प्रेमिका के पास भेजता है। इस प्रकार कालिदास ने प्रकृति का मानवीकरण एक अद्भुत रूप में किया है।

4. संवेदना के रूप में प्रकृति चित्रण

कभी-कभी हम देखते हैं कि प्रकृति भी संवेदनात्मक हो जाती है। प्रकृति की मानव की भांति सुख दुख व्यक्त करती है। इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हमें अभिज्ञान शकुंतलम में देखने को मिलता है। जब शकुंतला की विदाई होती है तो हम देखते हैं कि लताएं, वृक्ष, पादप सब उदास हैं, वे शकुंतला के विदेश से दुखी हैं वे नहीं चाहते कि शकुंतला जाए।

5. उपमान के रूप में प्रकृति का चित्रण

हम देखते हैं कि जब भी कोई कवि किसी प्रकार का चित्रण करना चाहता है तो वह उपमा के लिए प्रकृति को ही प्रस्तुत करता है, ताकि व्यक्ती या अवस्था या वस्तु विषय को आसानी से समझा जा सके। कालिदास तो वैसे भी उपमा के लिए प्रसिद्ध है। शकुंतला नाटक में हम देखते हैं कि शकुंतला के होठों के लिए पल्लव की लालिमा तथा कुमारसंभवम् में पार्वती की मुस्कान की सुंदरता प्रकृति में ही कवि को दिखाई देती है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि कालिदास प्रकृति के कितने प्रेमी थे। उनकी उपमा और प्रकृति के लगाओ ने उनके काव्य को एक अलग ही रूप प्रदान किया।

6. उद्दीपन के रूप में प्रकृति का चित्रण

हम देखते हैं कि जैसे-जैसे ऋतुएं बदलती है,, हम देखते हैं कि नवयुवक और नवीन युवतियों के मन भी उसी प्रकार बदल जाते हैं। ऋतुसंहार में छह ऋतु का वर्णन हमें उद्दीपन के रूप में ही देखने को मिलता है। हम देखते हैं कि प्रत्येक ऋतु अपनी सुंदरता से प्रेमियों के हृदय को प्रेम के लिए उद्दीप्त करती है।

हम कह सकते हैं कि कालिदास प्रकृति के पुजारी थे। अपने कार्यों में प्रकृति को हमेशा से ही स्थान दिया है। उन्होंने लगभग अपनी सभी रचनाओं में प्रकृति के सौंदर्य सिंगार रूप को उभारा है। जिस प्रकार से उन्होंने प्रकृति के सौंदर्य रूप को अपने काव्यों में स्थान दिया है, इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि शायद हुए प्रकृति के भीषण हुए भयावह रूप से अनजान थे। लेकिन फिर भी उनके प्रकृति प्रेम से हम पाते हैं कि उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रकृति व मानव जीवन को लगभग एक समान ही कर दिया था।

यदि आप कभी किसी हरे भरे मैदान, उद्यान, नदियों अथवा पहाड़ों के निकट गए हैं, तो आपने इन सभी में निहित चिर शांति का अनुभव अवश्य किया होगा। वास्तव में, प्रकृति के निकट जाने पर मनुष्य का मन, अत्यंत प्रफुल्लित इसलिए हो जाता है क्योंकि, मनुष्य प्रकृति से पूरी तरह सामंजस्य में है! हम प्रकृति से बिल्कुल भी अलग नहीं है, बल्कि अपने आप में हम प्रकृति ही हैं। हम प्रकृति का एक अभिन्न हिस्सा हैं और इस तथ्य को आदि कवि के नाम से विख्यात "कालिदास" ने विस्तार से वर्णित किया है।

कालिदास, संस्कृत साहित्य के सबसे महान कवि माने जाते हैं। कालिदास का अर्थ "काली का सेवक (कल्याः दासः)" होता है। कालिदास के लेखन में उनके सौंदर्य निरूपण की कला, भाव की कोमलता और कल्पना की समृद्धि की जितनी प्रशंसा की जाए, उतनी कम है। कालिदास को उनकी रचना 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के लिए अत्यंत सम्मान तथा प्रसंशा प्राप्त हुई है। कालिदास के इस नाटक को लाखों भारतीयों और विदेशियों ने बहुत सराहा है।

पंडित जयदेव कालिदास को 'कविकुलगुरु' कहते हैं, जिसका अर्थ "कवियों का गुरु" होता है। उनकी कविताओं से प्रतीत होता है कि कालिदास को कोमल पक्ष का स्वभाव बेहद प्रिय है। उन्होंने अपनी रचनाओं में शांतिपूर्ण आश्रमों, सुंदर उद्यानों, सुंदर महलों, गायन पक्षियों, भिनभिनाती मधुमक्खी और कोयल आदि प्राकृतिक पक्षों का प्रचुरता से उल्लेख किया है। कवि ने अपने नाटक अभिज्ञान शाकुन्तलम् में प्रकृति का वर्णन करते हुए कहा है-

"सुभागसलीलावगा: पातालसंसारगसुरभिवानवता:/
प्रच्छायसुलभनिद्र दिवसः परिणामारमणियाः//"
अर्थात दिन में नहाना सुखदायी होता है, वन से आने वाली वायु अति सुगन्धित हो जाती है और घनी छाँव में निंद्रा अनायास ही आ जाती है। कालिदास एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे और जिनकी प्रतिभाओं को साहित्य जगत में पूरी तरह से पहचाना और सराहा भी गया है। उनकी साहित्यिक कृतियों ने अमेरिका और एशिया के विद्वानों तथा प्राच्यविदों को भी आकर्षित किया है। उनकी काव्य प्रतिभाएँ संस्कृत कविता को परिष्कार, निरंतर स्पष्टता और अत्यधिक छायांकन के बिना ही शीर्ष पर ले जाती हैं। कालिदास की अभिव्यक्ति क्षमता भी अत्यंत सरल और अप्रभावित होती है।

प्रकृति के प्रति कालिदास का दृष्टिकोण कभी भी मानव केन्द्रित नहीं रहा है। उनके अनुसार प्रकृति और मनुष्य के बीच एक सच्चा रिश्ता होता है। अपनी रचनाओं में प्रकृति का वर्णन करना कालिदास की विशेषता रही है। उनकी रचना अभिज्ञान शाकुन्तलम् में यह सर्वाधिक सुस्पष्ट होता है। इस नाटक में, शकुंतला (राजा दुष्यन्त की पत्नी और भारत के सुप्रसिद्ध राजा भरत की माता और मेनका अप्सरा की कन्या) आश्रम के सभी पेड़ों, लताओं और जानवरों को मनुष्यों की की भांति प्रेम करती है। नाटक का अध्याय४ दिखाता है कि कैसे ये सभी भी शकुंतला की विदाई पर अत्यंत दुखी हो जाते हैं। शकुंतला गर्भवती हिरनी के बारे में भी बहुत चिंतित होती हैं। रबीन्द्रनाथ टैगोर ने भी कालिदास के प्रकृति प्रेम की प्रशंसा की है, और इसके बारे में बहुत कुछ विस्तार से लिखा है।

कई अन्य साहित्यकारों की भांति कालिदास भी हमेशा स्त्री की गरिमा के प्रति संवेदनशील रहे हैं। इनकी रचनाओं में शकुन्तला, इरावती, धारिणी, यक्ष की अनाम पत्नी जैसी नायिकाएँ सभी अविस्मरणीय हैं। अभिज्ञान शाकुन्तलम्, चिंता, अलगाव और पुनर्मिलन का एक अनूठा नाटक है। नाटक की कहानी मूल रूप से राजा दुष्यंत एवं शकुंतला के प्रेम के इर्द गिर्द घूमती है।

शकुंतला एक दिव्य अप्सरा मेनका की बेटी है, जिसे उसकी माँ उसके जन्म के बाद, एक जंगल में कण्व ऋषि के आश्रम के निकट छोड़ देती है। इस परित्यक्त बच्ची , 'शकुंतला' को शकुंत पक्षी (जंगल में मोर) द्वारा बचाया जाता है। इसलिए भी उसे शकुंतला कहा जाता है। ऋषि कण्व इस परित्यक्त बच्ची को अपने आश्रम में ले जाते हैं, जहाँ वह प्रकृति की गोद में पलती और बड़ी होती है। यहां पर जंगल के पक्षी, जानवर और साधु ही उसके संगी साथी होते हैं। वह मासूमियत और प्रकृति का भी प्रतीक है।
पहले अध्याय में, शकुंतला आदर्श नारीत्व के एक आदर्श अवतार के रूप में दिखाई देती हैं। उसके सौन्दर्य की तुलना केवल प्रकृति से ही की जा सकती है। शकुंतला और प्रकृति अपने गुणों में एक दूसरे का प्रतिनिधित्व करते हैं। उसका व्यक्तित्व प्रकृति के साथ उसके सामंजस्य में ही निहित होता है।

कालिदास की अन्य नायिकाएँ जैसे उर्वशी और मालविका आदि विलासिता भरा जीवन जीती हैं लेकिन शकुंतला, प्रकृति की संतान होती हैं। उसे प्रकृति ने पाला है, प्रकृति ही उसके मनो-यौन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब भी शकुंतला नाटक में प्रकट होती है, प्रकृति अपने विभिन्न रूपों में उसके साथ होती है। उसके स्थायी साथी जंगल में पक्षी, जानवर और पौधे होते हैं जिनके साथ उसने मानवीय संबंध स्थापित कर लिए हैं और वह उन्हें अपने सगे-संबंधियों के रूप में बुलाती है। उसने अपने पालतू जानवरों को नाम भी दिए हैं।

वह आश्रम में चमेली की झाड़ी को 'वंज्योत्सना' और एक मृग-शिशु को 'दीरघ पंगा' कहती है। वह प्रतिदिन पौधों को पानी देती है और अपने पालतू जानवरों को भोजन खिलाती है। फिर उसके बाद ही वह स्वयं भोजन ग्रहण करती है। उसके वृक्षों से कोई भी फूल नहीं तोड़ सकता। जब बगीचे में फूल खिलते हैं, तो यह उसके लिए उत्सव का अवसर होता है। यहां तक कि वनस्पति और जीव-जंतु भी शकुंतला के आनंद में उसके सहभागी बन जाते हैं। कालिदास जब भी शकुंतला के सौन्दर्य का वर्णन करते हैं, तो वे प्रकृति से चित्र उधार लेते हैं। अर्थात शकुंतला की तुलना अक्सर फूल या नाजुक पौधे से की जाती है। वह अपनी लता बहन वंज्योत्सना की शादी भी एक आम के पेड़ से कर देती है। एक छोटा सा शावक हर समय उसका पीछा करता रहता है।[16,17,18,19]

## IV. निष्कर्ष

उनके अन्य प्रसिद्ध नाटकों जैसे मेघदूतम और रघुवंशम आदि में भी प्रकृति के विविध रूप देखने को मिलते हैं । उनकी रचनाओं में प्रकृति का संजीव रूप में चित्रण किया गया है। हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार "कालिदास की रचनाओं में, जीवन के अविभाज्य अंग के रूप में, प्रकृति का प्रयोग कथानक को एक नई शक्ति प्रदान करता है। यह मुख्य क्रिया को ताजगी और जीवन शक्ति प्रदान करता है। उनकी रचनाओं में प्रकृति को एक पृष्ठभूमि के रूप में इस्तेमाल किया गया है।

उनके नाटक मानव दुनिया और प्रकृति के बीच एकता स्थापित करते है, और अविभाजित संवेदनाओं और सार्वभौमिक संवेदनाओं के बीच एक सामंजस्य बनाते है।"कालिदास की यह रचना बताती है कि वह एक महान कवि थे और प्रकृति उनकी आत्मा थी । वह हर पहलू की प्रकृति को समझते है। वास्तव में, वे प्रकृति के कवि थे। उनकी लेखन शैली बहुत शुद्ध और सभी के मन को छूने वाली है। कालिदास का अस्तित्व साहित्य सृष्टि के अंत तक इस संसार में विद्यमान रहेगा।[20]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 5, May 2024 |

# संदर्भ

1. Edwin Gerow, Kalidasa at the Encyclopædia Britannica.
2. ^ a b c Chandra Rajan (2005). The Loom Of Time. Penguin UK. pp. 268–274. ISBN 9789351180104.
3. ^ Kālidāsa (2001). The Recognition of Sakuntala: A Play In Seven Acts. Oxford University Press. pp. ix. ISBN 9780191606090. Archived from the original on 22 October 2020. Retrieved 14 January 2016.
4. ^ Gopal 1984, p. 3.
5. ^ P. N. K. Bamzai (1 January 1994). Culture and Political History of Kashmir. Vol. 1. M.D. Publications Pvt. Ltd. pp. 261–262. ISBN 978-81-85880-31-0. Archived from the original on 15 May 2016. Retrieved 15 November 2015.
6. ^ M. K. Kaw (1 January 2004). Kashmir and Its People: Studies in the Evolution of Kashmiri Society. APH Publishing. p. 388. ISBN 978-81-7648-537-1. Archived from the original on 20 May 2016. Retrieved 15 November 2015.
7. ^ "About Kalidasa". Kalidasa Academi. Archived from the original on 28 July 2013. Retrieved 30 December 2015.
8. ^ Wolpert, Stanley (2005). India. University of California Press. p. 38. ISBN 978-0-520-24696-6.
9. ^ Vasudev Vishnu Mirashi and Narayan Raghunath Navlekar (1969). Kālidāsa; Date, Life, and Works. Popular Prakashan. pp. 1–35. ISBN 9788171544684.
10. ^ Gopal 1984, p. 14.
11. ^ C. R. Devadhar (1999). Works of Kālidāsa. Vol. 1. Motilal Banarsidass. pp. vii–viii. ISBN 9788120800236.
12. ^ Sastri 1987, pp. 77–78.
13. ^ a b Gopal 1984, p. 8.
14. ^ Sastri 1987, p. 80.
15. ^ a b M. Srinivasachariar (1974). History of Classical Sanskrit Literature. Motilal Banarsidass. pp. 112–114. ISBN 9788120802841.
16. ^ K. Krishnamoorthy (1994). Eng Kalindi Charan Panigrahi. Sahitya Akademi. pp. 9–10. ISBN 978-81-7201-688-3.
17. ^ Kalidasa Translations of Shakuntala, and Other Works. J. M. Dent & sons, Limited. 1 January 1920. Archived from the original on 13 April 2021. Retrieved 5 October 2015.
18. ^ "Kalidas". www.cs.colostate.edu. Archived from the original on 13 April 2021. Retrieved 7 April 2021.
19. ^ Schuyler, Montgomery Jr. (1901). "The Editions and Translations of Çakuntalā". Journal of the American Oriental Society. 22: 237–248. doi:10.2307/592432. JSTOR 592432.
20. ^ Schuyler, Montgomery Jr. (1902). "Bibliography of Kālidāsa's Mālavikāgnimitra and Vikramorvaçī". Journal of the American Oriental Society. 23: 93–101. doi:10.2307/592384. JSTOR 592384.

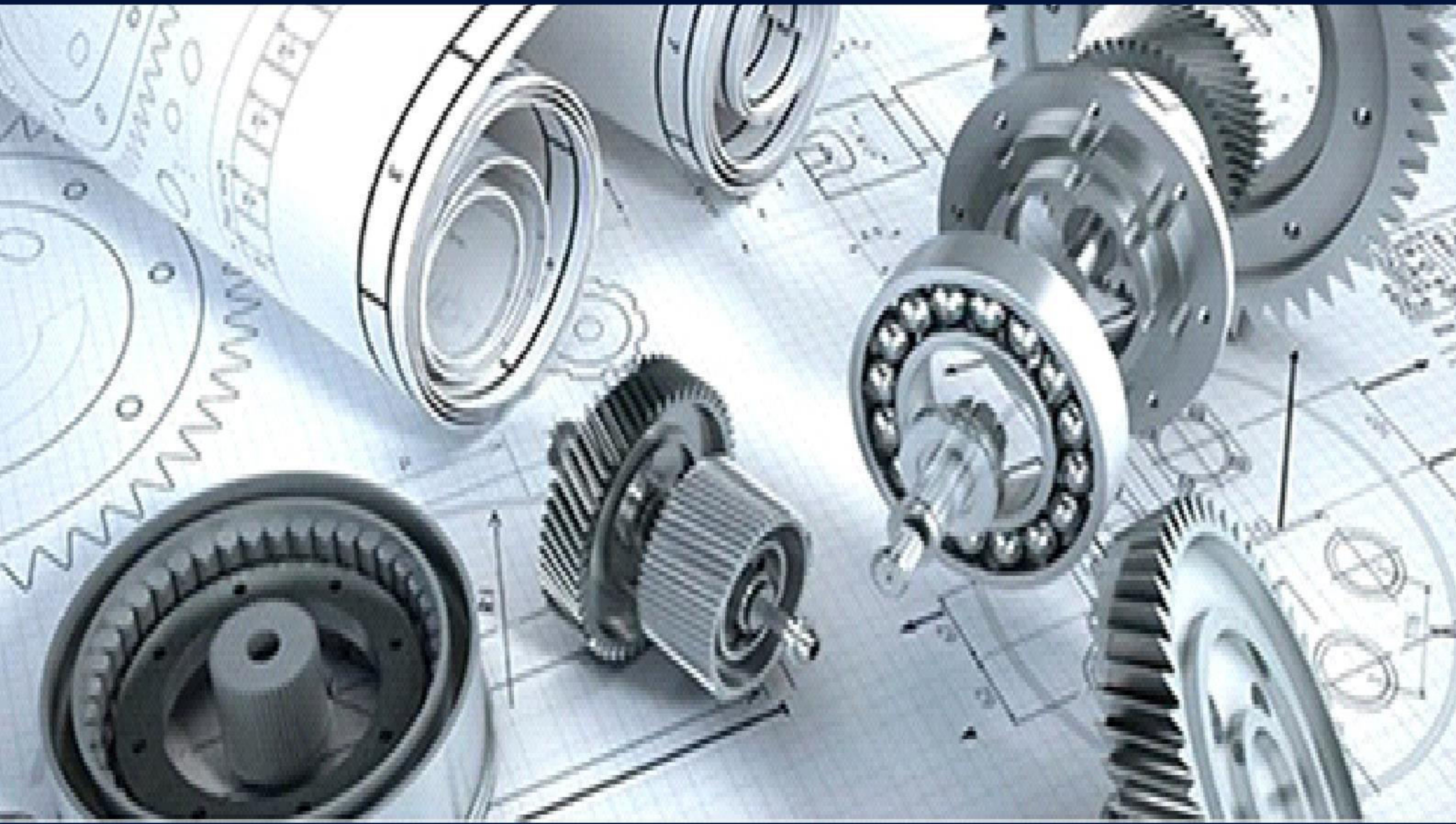


INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL
OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com

www.ijmrsetm.com